यादों में बसा सेवाग्राम

ऋषभ कुमार मिश्र*

यह शोध पत्र एथनोग्राफ़िक शोध[1] के अंतर्गत आनंद निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम के पूर्व विद्यार्थियों (पुराविद्यार्थियों) की विद्यालय-स्मृतियों को आधार बनाकर नई तालीम के सिद्धांत पर आधारित अधिगम-संस्कृति की व्याख्या को प्रस्तुत करता है। ये पुराविद्यार्थी वर्ष 1937 से वर्ष 1960 के बीच (लगभग 23 वर्ष) इस विद्यालय से जुड़े रहे। इन विद्यार्थियों के पास नई तालीम के निर्माताओं, जैसे— महात्मा गांधी, आर्यनायकम् दंपत्ति, विनोबा और देवीप्रसाद आदि से प्रत्यक्ष अंतर्क्रिया के अनुभव थे। ये विद्यार्थी विद्यालय की दैनिक दिनचर्या के साथ-साथ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया तथा विद्यालय की व्यवस्था एवं प्रबंधन के बारे में अपने अनुभव साझा करते हैं। वे सेवाग्राम में रहते हुए स्वावलंबी बनने की शिक्षा एवं आज़ादी के आंदोलन में उनके योगदान तथा विद्यालय, विद्यार्थियों और अध्यापकों की भूमिका को अपनी स्मृतियों के सहारे साझा करते हैं। इन पुराविद्यार्थियों के अनुभव एवं स्मृति आधारित आख्यानों (नरेटिव) से हमें जीवन से जुड़ी व्यावहारिक एवं शिल्प केंद्रित शिक्षा के प्रयोग, आज़ादी के आंदोलन में सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता एवं सक्रियता तथा अनेक उथल-पुथल के बीच विद्यालय एवं समुदाय के संबंधों की जानकारी एवं मार्गदर्शन मिलता है।

© NCERT not to be republished

वर्ष 1937 में सेवाग्राम आश्रम में नई तालीम का प्रयोग आरंभ हुआ। आश्रम परिसर में ई.डब्ल्यू आर्यनायकम् और आशादेवी आर्यनायकम् जी द्वारा आनंद निकेतन विद्यालय का संचालन किया गया। इस विद्यालय के विषय में मार्जरी साइक्स द्वारा लिखित नई *तालीम की कहानी* और शिवदत्त द्वारा संपादित पुस्तक *नई तालीम— एक विहंगावलोकन* में जानकारी मिलती है। इन दोनों संदर्भों में मुख्यतः विद्यालय की वार्षिक रिपोर्टों को आधार बनाकर नई तालीम के प्रयोग की चर्चा की गई है। विशेषकर, नई तालीम की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, पाठ्यचर्या के विकास और क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला गया है। इन संदर्भों में यत्र-तत्र अध्यापकों के आख्यान मिलते हैं। इससे इतर प्रस्तुत शोध पत्र में 1937 से 1960 के दौरान विद्यार्थी रहे कुछ विद्यार्थियों के तत्कालीन अनुभवों को संकलित कर प्रस्तुत किया गया है। इसके माध्यम से हम नई तालीम आधारित अधिगम संस्कृति की विशेषताओं को पहचान सकते हैं।

इसमें नत्थू चौहान, गजानन अंबुलकर, सुमनताई बंग, कुसुम ताई पांडेय, प्रभात, आशा गिरी, अशोक

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

[1]यह कार्य रा.शै.अ.प्र.प. की एरिक योजना के अंतर्गत वित्तपोषित शोध कार्य का हिस्सा है।

गिरी, पांडुरंग गोस्वामी, नारायण और वैश्य गुरुजी के साक्षात्कार सम्मिलित हैं। इन सभी भागीदारों की उम्र 70 वर्ष से ऊपर थी। सुमनताई बंग 96 वर्ष, पांडुरंग गोस्वामी 90 वर्ष, वैश्य गुरुजी 88 वर्ष, कुसुमताई 87 वर्ष, अंबुलकर गुरुजी 80 वर्ष, अशोक गिरी 73 एवं आशा गिरी 72 वर्ष, प्रभात 75 वर्ष के हैं। इन पुराविद्यार्थियों ने आनंद निकेतन विद्यालय से प्रारंभिक शिक्षा पूरी की थी। अंबुलकर गुरुजी ने इस विद्यालय में कक्षा ग्यारहवीं तक की शिक्षा प्राप्त की थी। आशा गिरी ने आनंद निकेतन में आठवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की थी। नत्थू चौहान गुरुजी ने आनंद निकेतन विद्यालय से उत्तर बुनियादी (दसवीं तक) तक की शिक्षा पूर्ण की। इसके बाद इन्होंने स्थानीय प्राथमिक विद्यालय में 30 वर्ष तक अध्यापन किया। अशोक गिरी और पांडुरंग गोस्वामी ने उत्तम बुनियादी (स्नातक) की उपाधि प्राप्त की थी। इनमें से अधिकांश पुराविद्यार्थी वर्तमान में भी नई तालीम और सेवाग्राम आश्रम से जुड़े हुए हैं।

सेवाग्राम में विद्यालय का आरंभ

इस कार्य के भागीदारों ने अपनी स्मृतियों के सहारे विद्यालय के आरंभिक वर्षों के बारे में बताया। इनके आख्यानों के माध्यम से ज्ञात हुआ कि वर्ष 1937 में सेवाग्राम में प्रचलित उद्योगों को केंद्र में रखकर नई तालीम का संचालन आरंभ हुआ। आरंभिक वर्षों में सेवाग्राम आश्रम और आस-पास के गाँवों के कुछ बच्चे यहाँ पढ़ने के लिए आते थे। विद्यालय की दिनचर्या में खेती, गौशाला में काम, सूत कताई और बुनाई तीन प्रमुख उद्योग थे। इन तीनों उद्योगों में लड़के और लड़कियाँ साथ में कार्य करते थे। दोपहर में उक्त उद्योगों को ध्यान में रखकर 'स्वाध्याय' का कार्य होता था। यह स्वाध्याय कक्षा शिक्षण जैसा था, लेकिन विद्यार्थियों का कक्षाओं या वर्गों में कोई कठोर विभाजन नहीं था। ये उद्योग वर्गवार नहीं चलते थे, जिसे जो उद्योग पसंद था, वह उसमें सहभागिता करता था। शाम को 8 से 9 बजे तक आर्यनायकम् जी के साथ चर्चा होती थी। इस चर्चा में रोज़मर्रा के विषय से लेकर अमूर्त विषय, समसामयिक घटनाएँ आदि शामिल होते थे।

आरंभिक दिनों में बिना किताब के पढ़ाई होती थी, क्योंकि नई तालीम पर आधारित किताबों का विकास नहीं हुआ था। सरकारी किताबें नई तालीम की पद्धति से मेल नहीं खाती थीं। इस कारण विद्यार्थी, अध्यापकों के साथ मिलकर जो कार्य करते थे, उसी से सीखते थे। इसकी पुष्टि मार्जरी साइक्स और शिवदत्त के लेखों से भी होती है। आगे चलकर सेवाग्राम परिसर में पूर्व बुनियादी, बुनियादी, उत्तर बुनियादी और उत्तम बुनियादी और अध्यापक शिक्षा केंद्र संचालित होने लगे। विद्यालय के संचालन में आर्यनायकम् दंपत्ति की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस विद्यालय के संचालन में भी स्थानीय समुदाय ने सहयोग किया। चौहान गुरुजी और कुसुमताई पांडेय ने साझा किया कि गांधी के नाम पर देहात में बहुत सारा दान मिल जाता था। गाँव से गेहूँ, ज्वार, तुअर दाल आदि आ जाता था। जो जितना हो सकता था, वह देता था। ये सामग्रियाँ जब आवश्यक मात्रा से अधिक हो जाती थीं तो उन्हें वापस गाँव में ज़रूरतमंदों को दे दिया जाता था।

प्रयोग का परिपक्व होना

जैसे-जैसे सेवाग्राम आश्रम में नई तालीम का प्रयोग सुदृढ़ हुआ, वैसे-वैसे यहाँ देश के लगभग हर राज्य से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आने लगे। कुसुम ताई पांडेय

© NCERT not to be republished

बताती हैं कि 1940 के आस-पास अलग-अलग कक्षाओं में लगभग 200 विद्यार्थी थे जो उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा, पंजाब और पश्चिम बंगाल से आए थे। स्वतंत्रता के समय यहाँ लगभग 400 विद्यार्थी थे। गजानन अंबुलकर गुरुजी के अनुसार देश में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसार के साथ स्वदेशी शिक्षा के पक्ष में माहौल बन रहा था। सेवाग्राम में गांधीजी के रहने के कारण कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं दूरदराज़ के गाँव के अन्य लोग यहाँ अपने बच्चों को शिक्षा के लिए भेजना चाहते थे। इस कारण आनंद निकेतन भारतीय शिक्षा केंद्र के रूप में उभरा। वैश्य गुरु जी बताते हैं कि उस समय गाँव में स्कूल नहीं थे। अंग्रेज़ी माध्यम के जो स्कूल थे, वहाँ माता-पिता बच्चों को भेजने में समर्थ नहीं थे।

इस परिस्थिति में जब सेवाग्राम के आस-पास के गाँवों में आश्रम के कार्यकर्ताओं ने भ्रमण किया तब गाँव वालों को आनंद निकेतन विद्यालय एक सुनहरे अवसर के रूप में लगा। ये कार्यकर्ता घर-घर जाते और जिस घर में ज़्यादा बच्चे होते, उनमें से एक बच्चे का प्रवेश आनंद निकेतन में कराने को कहते। आनंद निकेतन के शुरुआती दौर में आश्रम के रहने वाले कार्यकर्ताओं के पाल्य पढ़ने आए। उसके बाद आस-पास के गाँवों से बच्चे जुड़ने लगे। अधिकांश विद्यार्थी आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवारों से आते थे जो शहर में जाकर पढ़ाई नहीं कर सकते थे। कुछ विद्यार्थी गांधीजी के विचारों से प्रभावित परिवारों से भी थे। ऐसे ही एक विद्यार्थी विनय पांडे थे जो एक ज़मींदार के पुत्र थे। इस तरह से स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसार, स्वदेशी शिक्षा के प्रति आकर्षण, शिक्षा के अवसर की सुलभता ने सेवाग्राम में नई तालीम के प्रयोग को सुदृढ़ किया। इस तरह से सेवाग्राम आश्रम देश भर में नई तालीम के प्रसार के केंद्र के रूप में भी उभरा। यहाँ अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आरंभ किया गया। इस कार्यक्रम के बारे में चौहान गुरुजी, वैश्य गुरुजी और अंबुलकर गुरुजी ने चर्चा की और बताया कि इस केंद्र पर अध्यापकों को छह माह का प्रशिक्षण दिया जाता था। प्रशिक्षण के बाद वे अपने-अपने विद्यालयों में नई तालीम के सिद्धांतों के अनुसार शिक्षण करते थे। इस प्रशिक्षण विद्यालय ने देश भर के लिए नई तालीम के अध्यापक तैयार किए। स्वतंत्रता के बाद अनेक राज्य सरकारों ने अपने अध्यापकों को प्रशिक्षण के लिए यहाँ भेजा था।

आनंद निकेतन— जीवन के साथ जीवन की शिक्षा का मॉडल

आनंद निकेतन विद्यालय के इन पुराविद्यार्थियों ने अपनी जिन स्मृतियों को साझा किया वे जीवन के साथ जीवन की शिक्षा के मॉडल को व्यक्त करती हैं। सभी भागीदारों ने बताया कि सेवाग्राम आश्रम के नियमों के अनुसार विद्यार्थियों की दिनचर्या निर्धारित थी। विद्यार्थियों और अध्यापकों की दिनचर्या सुबह 6:30 बजे शुरू होती थी। 30 मिनट में दैनंदिन क्रिया के बाद वे 7 बजे नाश्ता करने जाते थे। नाश्ता विद्यार्थियों द्वारा ही बनाया जाता था। विद्यार्थी नाश्ते के बाद एक से डेढ़ घंटे पढ़ते थे। 8 बजे सभी खेत में कार्य करने के लिए जाते थे। वहाँ 8 से 10:30 बजे तक कार्य करते थे। इसके बाद 12 बजे तक रसोई का काम होता था। 12 बजे से 1 बजे तक आराम करते थे। 1 बजे से 5 बजे तक कक्षाएँ चलती थीं। कक्षाओं के बाद 30 मिनट का विराम होता। पुनः 5:30 बजे से रसोई का कार्य आरंभ हो जाता था। प्रार्थना से

© NCERT not to be republished

आरंभ करके प्रत्येक कार्य विद्यार्थी और अध्यापक मिलकर करते थे।

आनंद निकेतन विद्यालय के विद्यार्थी रहे भागीदारों ने अपने विद्यालयी जीवन के अनेक अनुभव साझा किए। उदाहरण के लिए आशा गिरी बताती हैं कि जब वे आनंद निकेतन में पढ़ती थीं तो हर रोज़ सुबह माँ-पिता जी के साथ आश्रम में प्रार्थना के लिए जाती थीं। इसके बाद आधा घंटा सूत की कताई करती थीं। वे पूरा दिन विद्यालय में ही रहती थीं। इनके परिवार के लिए आश्रम ही घर था। इन्हीं भावों को चौहान गुरुजी और पांडुरंग गुरुजी ने भी व्यक्त किया है। इन दोनों ने विशेष रूप से विद्यालय और छात्रावास संचालन के लिए बनाए जाने वाले 'मंत्रिमंडल' पर भी प्रकाश डाला। यह मंत्रिमंडल विद्यार्थियों के संयोजन से बनता था और विद्यालय एवं छात्रावास के संचालन में सहयोग करता था। इस मंत्रिमंडल में शिक्षा मंत्री, सफ़ाई मंत्री, कृषि मंत्री, खाद्य (रसोई) मंत्री और आरोग्य मंत्री आदि बनते थे। यह मंत्रिमंडल हर महीने बदलता रहता था। जितने भी मंत्री थे वह अपने कामों को देखने के लिए समय-समय पर अपने-अपने दालानों का भ्रमण करते थे और अवलोकन करते थे कि उनके विभाग का काम कैसा चल रहा है? प्रत्येक मंत्री के दायित्वों की समीक्षा होती थी। खाद्य मंत्री का काम होता था कि वह अपने विभाग में भ्रमण करे और देखे कि कितना खाना बन रहा है? कैसे खाना बनाया जा रहा है? आदि। शिक्षा मंत्री का काम होता था कि कक्षाएँ नियमित चल रही हैं या नहीं? विद्यार्थियों की भागीदारी की स्थिति क्या है? आदि। सफ़ाई मंत्री सफ़ाई का कार्य देखता था, जैसे— सफ़ाई के कार्य में सभी की भागीदारी हो रही या नहीं। परिसर में ऐसी कोई जगह तो नहीं बची, जिसे साफ़ न किया गया हो। मंत्रिमंडल के चयन की प्रक्रिया लोकतांत्रिक होती थी। इसमें मतदान की प्रक्रिया के स्थान पर चर्चा और सहमति को आधार बनाया जाता था।

इन विद्यार्थियों ने विद्यालय के बहु-सांस्कृतिक परिवेश पर भी प्रकाश डाला। वैश्य गुरुजी कहते हैं कि, "मेरे समय में जब प्रार्थना होती थी तो गीत सभी धर्म के होते थे। एक आश्रम-भजनावली थी, उससे हम लोग गीत गाते थे। उस किताब में सभी भाषाओं (बंगाली, मराठी, गुजराती आदि) और धर्मों के गीत थे। इसमें स्थानीय मराठी संतो के गीत, सूरदास के गीत, कबीर के गीत, मीरा के भजन आदि शामिल थे।" विद्यालय में मनाए जाने वाले पर्व एवं त्यौहार इसके बहु-सांस्कृतिक परिवेश का वास्तविक अर्थ देते थे। अधिकांश विद्यार्थियों ने शिवाजी जयंती, क्रिसमस, जन्माष्टमी और संत मेला आदि का उल्लेख किया। इसके अलावा विद्यालय के तीन मुख्य आयोजन होते थे— 2 अक्तूबर गांधी जयंती, 30 जनवरी गांधीजी की पुण्यतिथि और 22 फ़रवरी को कस्तूरबा गाँधी की पुण्यतिथि मनाते थे। इन तीनों कार्यक्रमों के दिन सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक अखंड सूत कताई चलती थी।

आनंद निकेतन विद्यालय में आरंभ से ही संगीत, प्रार्थना, भारत के त्यौहार, लोकनृत्य, कला आदि की गतिविधियाँ विद्यालयी अनुभव का अंग थे। चौहान गुरुजी जैसे विद्यार्थी इसका श्रेय आर्यनायकम् दंपत्ति को देते हैं। चौहान गुरुजी बताते हैं कि आर्यनायकम् दंपत्ति शांतिनिकेतन से प्रशिक्षित थे, इस कारण वे कलात्मक गतिविधियों

के लिए एक अच्छा परिवेश बना सके। प्रभात जी के अनुसार आश्रम के अंदर संचालित होने के कारण इन गतिविधियों को आश्रम-कार्यकर्ताओं से सहयोग मिलता था। ये कार्यकर्ता इन कलात्मक गतिविधियों के लिए विशेषज्ञ के रूप में सहयोग करते थे। सभी पूर्व विद्यार्थी विद्यालय के कलात्मक परिवेश की सराहना करते हैं। चौहान गुरुजी बताते हैं कि संगीत भवन में सभी प्रकार के वाद्ययंत्र थे। पूरे भारत में जितने भी वाद्य होते थे सभी उपलब्ध थे। उस कक्षा में सिर्फ़ संगीत की दुनिया होती थी, संगीत ही सिखाया जाता था।

ऐसे ही अंबुलकर गुरुजी बताते हैं कि कला भवन में मिट्टी के उपकरण बनाने, चित्र बनाने और मूर्ति बनाने की गतिविधि होती थी। अंबुलकर गुरुजी के शब्दों में, "मैंने यहाँ उत्तर बुनियादी (कक्षा ग्याहरवीं) तक की शिक्षा प्राप्त की। मेरा विशेष झुकाव कला के प्रति था। समय के साथ मैं चित्रकला में निपुण होता चला गया। अभी भी मैं कला बनाता हूँ, जहाँ बैठता हूँ, वहीं बनाना शुरू कर देता हूँ। सेवाग्राम मेडिकल के मोनोग्राम में महात्मा गांधी के साथ जो माइक्रोस्कोप दिख रहा है, उसका डिज़ाइन मैंने ही तैयार किया है। सेवाग्राम मेडिकल कॉलेज की प्रयोगशाला में रखे अनेक शरीर-अंगों के चित्रों को मैंने ही बनाया है।" ऐसे ही कुछ विशिष्ट अनुभवों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

बापू ने आश्रम में एक हरिजन पेटी लगाई थी। लोग हरिजन पेटी में पैसे डालते थे। वह पैसा आश्रम में खर्च होता था। मुझे समझ में आया कि हरिजन पेटी पर सबका अधिकार है। मैंने आर्यनायकम् जी से पूछा कि यह हरिजन पेटी सबके लिए है। इससे जो गरीब हैं और पढ़ना चाहते हैं उनको पैसा मिलना चाहिए। बाबा बोले हाँ मिलना चाहिए। मेरे इस सुझाव पर आर्यनायकम् जी ने गांधीजी से बात की। गांधीजी भी सहमत हो गए। इसके बाद इस पेटी में एकत्रित राशि से ज़रूरतमंद बच्चों की मदद की जाने लगी। हरिजन पेटी के धन से दाऊताकसांडे नाम के विद्यार्थी को मेडिकल की पढ़ाई के लिए मदद की गयी थी। (पांडुरंग गुरूजी द्वारा साझा किया गया आख्यान)

मुझे मशीनों को ठीक करने के कार्य में रुचि थी। एक बार आश्रम में कुछ मशीनें आई। इन मशीनों में एक इंजन स्टार्ट नहीं हो रहा था। सभी परेशान हो गए। फिर मैंने इंजन को खोला और जाँचा। मैंने देखा कि इस नई मशीन में दो टाइम गेयर हैं। मैंने दोनों के समय को संतुलित किया और मशीन चल पड़ी। कभी-कभी गाँव के किसान रात में मेरे पास आते और बताते कि उनकी मोटर (सिंचाई के लिए लगी मशीन) चालू नहीं हो रही है। मैं उसी समय रात में जाकर उनकी मोटर ठीक करता था। बाद में मैंने अनेक किसानों को मोटर ठीक करना भी सिखाया। (अशोक गिरी द्वारा साझा किया गया आख्यान)

उत्तर बुनियादी वर्ग में एक लड़का था— रोईदास जोहरे। उसकी शादी होने वाली थी। आर्यनायकम् जी ने इस विद्यार्थी को बुलवाया और कहा कि तुम्हारी पत्नी आ रही रही है उसके लिए अच्छी साड़ी बनाओ। पांडुरंग गुरु जी बुनाई पढ़ाते थे। उन्होंने उसकी पल्लू डिज़ाइन करने में मदद की। विद्यालय की छात्राओं ने उसकी डिज़ाइन के चुनाव में मदद की। (चौहान गुरुजी द्वारा साझा किया गया आख्यान)

© NCERT not to be republished

हम अपने दोस्तों के साथ खेत का कोई टुकड़ा चुन लेते थे। फिर, योजना बनाते थे कि इसे खेती के लिए कैसे तैयार करें? कौन सी फ़सल उगाएँ? खेत कैसे अच्छा दिखे? आदि। पूरा समूह मिलकर क्यारी बनाता, घास निकालता, पानी देता। हमने पहली बार वर्धा में बासमती चावल उगाया। रसोई की देखरेख करने वाले ओंकार जी ने तब कहा कि 'तुम लोगों ने जो धान उगाया उसकी सुगंध रसोई तक आती है। उस समय केवल गोबर की ही खाद का इस्तेमाल करते थे। पत्तों की कम्पोस्ट खाद तैयार करते थे। हमने इतना धान उगाया कि शांति भवन भर गया था। (प्रभात द्वारा साझा किया गया आख्यान)

हम लोग खेत से कपास निकालते थे। उसको साफ़ करते थे उसकी पेंडुल बनाना और फिर सूत काटते थे। सूत काटने के बाद कपड़ा बुनते थे। अगर हमें रंगीन कपड़ा बनाना है तो धागे को धोकर रंगना होता है। गाय के गोबर से धागे को धुलते थे। गोबर को गाढ़ा करके और उसमें कपड़ा भिगोकर रातभर के लिए डाल देते थे। उसके बाद दूसरे दिन उसको निकालकर अच्छी तरह से धोते थे। रसायन का उपयोग नहीं करते थे। कपड़े को धोकर घास के ऊपर डाल देते थे। जैसे-जैसे वह सूखता जाता था, वैसे-वैसे उसके ऊपर पानी छिड़कते, फिर उसका रंग सफ़ेद होता जाता था। कपास में तेल की मात्रा अधिक होती है। गोबर की वजह से तेल निकल जाता है। वह कपड़ा धीरे-धीरे सफ़ेद हो जाता था। आज तो ब्लीचिंग से ब्लीच किया जाता है लेकिन ब्लीचिंग से कपड़े की उम्र कम हो जाती है। (अंबुलकर गुरुजी द्वारा साझा किया गया आख्यान)

अभय बंग और भीमराव एक ही कक्षा में थे। वे इन दोनों से एक कक्षा पीछे थे। इस विद्यालय में ऐसी सुविधा थी कि जिस विद्यार्थी का जो विषय कमज़ोर है तो वह वर्तमान कक्षा से पहले की कक्षा में जाकर पढ़ सकता था। उसकी कक्षा वही रहती लेकिन वह अपने विषय को पिछली कक्षा में बैठकर ठीक कर सकता था। (नारायण गुरु जी द्वारा साझा किया गया आख्यान)

© NCERT not to be republished

अध्यापक

इस विद्यालय के अध्यापक गांधीजी के विचारों से प्रभावित कार्यकर्ता थे। इनके द्वारा प्रयास किया जाता था कि गाँव और परिवार, विद्यालय और गाँव अलग-अलग इकाई के रूप में न विकसित हों। नई तालीम के अनेक अध्यापक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उदाहरण के लिए, अंबुलकर जी के पिता स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के उद्देश्य से अपना पैतृक गाँव छोड़कर सेवाग्राम आ गए थे। भविष्य में उन्होंने आनंद निकेतन विद्यालय में अध्यापन किया। इनके जैसे अनेक कार्यकर्ता सरकारी नौकरी छोड़ कर गांधीजी के मार्गदर्शन में काम करने के लिए सेवाग्राम आए थे। ऐसे कार्यकर्ताओं में से ही स्कूल के अध्यापक तैयार किए जाते थे।

आनंद निकेतन के पुराविद्यार्थी अपने अध्यापकों— सत्यनाथन गुरु जी, राधाकृष्ण गुरु जी, परसाई गुरुजी, देवीप्रसाद गुरुजी आदि को याद करते हैं। ये सभी बताते हैं कि उनके अध्यापक अपने विद्यार्थियों को 'सगी संतान' जैसा मानते थे। ये अध्यापक रात में कम से कम दो बार आकर देखते थे कि किसी विद्यार्थी को कोई दिक्कत तो नहीं है, विद्यार्थी क्या कर रहे हैं और क्या नहीं? वे कभी भी विद्यार्थियों पर गुस्सा नहीं करते थे। चौहान गुरुजी बताते हैं कि कुसुम ताई अनेक बच्चों के लिए माँ

के समान थीं। वे एक विद्यार्थी का उल्लेख करते हैं जो 13 साल का था, तब उसके माता-पिता गुज़र गए थे। आश्रम में उसका लालन-पालन कुसुम ताई ने किया। पांडुरंग गुरुजी बताते हैं कि उन्होंने आशादेवी आर्यनायकम् को अपने हाथ से बुनकर एक साड़ी उपहार में दी थी। उन्हीं के शब्दों में, "मैं बुनाई में अव्वल था। एक बार क्या हुआ कि आशादेवी का जन्मदिन था और उसी दिन मैंने सूत काटा था। आशा जी मिलीं और बोलीं कि पांडुरंग मुझे साड़ी बुनकर दे न, मेरा जन्मदिन है। मैंने कहा कि माता जी ज़रूर बनाऊँगा आप सिर्फ़ आशीर्वाद दीजिए। सूत की घुंडी लेकर गया और मुझे पता था कि बंगाली लोगों को लाल किनारे वाली साड़ी पसंद है। मैंने उनसे पूछा कि कैसा रंग चाहिए, कढ़ाई कैसी चाहिए? तो माता जी ने कहा बेटा मुझे लाल साड़ी पसंद है। मैंने सोचा कि किनारी तो लाल रहेगी लेकिन पल्ले में क्या करूँ? मछली निकाल दूँ! फिर तय किया कि मैं ऐसी साड़ी बनाऊँ कि पानी में मछली तैर रही है। मैंने मछली का बड़ा पल्ला बनाया उनके जन्मदिन पर दिया। उन्होंने सभी विद्यार्थियों के सामने बताया कि यह साड़ी पांडुरंग ने बनायी है।"

अशोक गिरी अपने अध्यापकों की मूल्यांकन प्रक्रिया के बारे में बताते हैं कि उनके अध्यापक प्रश्न देते थे और कह देते थे कि जाओ जहाँ बैठकर लिखना हो उत्तर लिखो, जिस सामग्री को देखना चाहते हो, उसका उपयोग कर लो। चूँकि, प्रश्न समवाय पद्धति पर आधारित होते थे, इसलिए उनका उत्तर किताबों में नहीं बल्कि अनुभव और कार्यानुभव के आधार पर लिखा जाता था। कुसुम ताई बताती हैं कि सत्रांत में बच्चों के कार्यों की प्रदर्शनी लगाई जाती थी। यह प्रदर्शनी बच्चों के कार्यों का मूल्यांकन होती थी जिसमें यह पता चलता था कि कौन-क्या कर सकता है। ये पुराविद्यार्थी बताते हैं कि आर्यनायकम् जी देश-विदेश से योग्य अध्यापकों को आमंत्रित भी करते थे। वर्ष 1970 के आस-पास बाबा (आर्यनायकम् जी) जर्मनी गए। उनके साथ जर्मनी से पाँच इंजीनियर कुछ मशीन लेकर आए। उन्होंने इन इंजीनियरों की मदद से गाँव वालों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में आनंद निकेतन के 20 लड़के वर्धा ज़िला स्कूल के 40 लड़के शामिल हुए। बाद में इन विद्यार्थियों ने इन्हीं इंजीनियरों से दो साल का प्रशिक्षण लिया।

इस ट्रेनिंग के परिणामस्वरूप इन बच्चों ने अपने-अपने गाँवों में सहयोग किया। इसके अलावा यदि विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र से संबंधित कोई व्यक्ति सेवाग्राम आश्रम में आता था, तो गांधीजी उसे भी सेवाग्राम आश्रम में भेजा करते थे। भागीदार विद्यार्थियों ने बताया के आर्यनायकम् दंपत्ति के अलावा परसाई जी जो गौशाला का कार्य देखते थे, देवी प्रसाद कला के विशेषज्ञ थे, बलवंत चैधरी खेती सिखाते थे, आनंद बाखडे बुनाई का काम सिखाते थे। ऐसे ही जयपुरकर गुरुजी गणित, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान पढ़ाते थे। सत्यंत गुरुजी केरल से थे उन्होंने तकली पर *वस्त्रपूर्णा* नामक किताब लिखी थी। विनोबा जी पवनार में रहते थे। वे जब सेवाग्राम आते थे तब विद्यालय के विद्यार्थियों से गीता एवं रामायण पर बात करते थे। इन व्याख्यानों की विद्यालय के दैनिक कार्यक्रम में गिनती नहीं होती थी। प्रायः वे शनिवार और रविवार को आते थे।

© NCERT not to be republished

आर्यनायकम् दंपत्ति का समर्पण

ई. डब्ल्यू. आर्यनायकम् और आशा देवी आर्यनायकम् ने आनंद निकेतन विद्यालय को नई तालीम के सिद्धांतों के अनुरूप साकार रूप दिया। बापू ने विश्वभारती की अपनी यात्रा के दौरान ई. डब्ल्यू. आर्यनायकम् को सेवाग्राम में कार्य करने के लिए आमंत्रित किया था। आनंद निकेतन के सभी विद्यार्थी आशा देवी को माँ और आर्यनायकम् को बाबा कहते थे। इस कार्य के सहभागी बताते भी हैं कि आर्यनायकम् दंपत्ति बच्चों के साथ अभिभावक जैसा व्यवहार करते थे। आर्यनायकम् जी का आस-पास के गाँव से भी गहरा संबंध था। इन गाँवों में यदि विवाद होता था, लोग उसके निपटारे के लिए पुलिस या सरकारी अधिकारी के बजाय आर्यनायकम् जी की बात मानते थे। आर्यनायकम् दंपत्ति स्कूल के प्रत्येक पक्ष पर ध्यान रखते थे। वे अवलोकन करते रहते थे कि कौन क्या कर रहा है? अध्यापक क्या कर रहा है? बच्चे क्या कर रहे हैं? सबसे ज़्यादा कार्य अध्यापकों को करना पड़ता था। आर्यनायकम् जी मानते थे कि बच्चे तभी अच्छे से कार्य करेंगे जब अध्यापक ठीक से अपनी तैयारी और अपने दायित्वों को निभाएँ।

आर्यनायकम् जी के योगदान का उल्लेख करते हुए आशा गिरी बताती हैं कि, 'हमारे आर्यनायकम् जी छुट्टियों में विदेश जाकर गांधी-विचारों पर भाषण देते थे। वहाँ से जो पैसा मिलता था उस पैसे से स्कूल चल रहा था।' आर्यनायकम् जी की विशेषता बताते हुए पांडुरंग जी बताते हैं कि मैं गाँव में दूसरी कक्षा में पढ़ता था। मुझे कक्षाध्यापक ने इतना मारा कि मेरा हाथ फूल गया था। मैं डर गया और विद्यालय छोड़ दिया। मैं खाली समय में गाय चराने लगा। उसी रास्ते से आर्यनायकम् जी तांगे से आते-जाते थे। वे बहुत सुंदर थे। साफ़ कपड़े पहनते थे। यह देखकर उनसे मैं कभी-कभार पैसे मांग लेता था। वे खुशी-खुशी दे देते थे। मुझे देखकर कुछ और बच्चों ने भी पैसे मांगने शुरू कर दिए। वे सभी को पैसे देते थे। एक दिन उन्होंने पैसा मांगने वाले बच्चों से पूछा कि कौन-कौन आश्रम में चलकर पढ़ना चाहता है? कोई तैयार नहीं हुआ लेकिन मैंने हाँ कह दिया। उन्होंने मुझे तांगे में बैठाया और सीधे जयपुरकर गुरुजी के पास लेकर गए। मुझे बाबा (आर्यनायकम् जी) ने समझाया कि, "देखो बेटा यहाँ पूरे भारत के लोग रहते हैं। चोरी मत करना और झूठ मत बोलना। कोई ज़रूरत हो तो मुझसे कहना। मैंने भी उनसे यही वादा किया। तब से मैं सेवाग्राम आश्रम से जुड़ गया।"

ऐसा ही एक अनुभव अशोक गिरी बताते हैं। विद्यालय के निकट संतरे का बाग था। सुबह-सुबह विद्यार्थी दैनिक कार्यों की निवृत्ति के लिए उस बाग की तरफ जाते थे। कुछ विद्यार्थी संतरे भी तोड़ लेते थे। विद्यालय में इसकी शिकायत आई। आर्यनायकम् और आशा जी ने बच्चों की बैठक बुलाई जिसमें यह विषय रखा गया। पूछा गया कि चोरी किसने की है? एक विद्यार्थी ने खड़े होकर कहा कि उसने तोड़ा है। आर्यनायकम् जी ने पूछा कि क्यों तोड़ा? उस बच्चे ने कहा कि उसकी संतरे खाने की इच्छा हुई तो उसने तोड़ लिया। उसकी बात सुनकर खेत की देखरेख करने वाले कार्यकर्ता को बुलाकर पूछा गया कि संतरे रसोई में नहीं आए क्या? खेत वाले ने बताया कि उसने संतरे व्यापारी को बेच दिए हैं। आर्यनायकम् जी ने पूछा कि संतरे व्यापारी के लिए हैं या बच्चों के लिए? बच्चों को चोरी की शुरुआत तो आप की इस

© NCERT not to be republished

भूल के कारण हुई। जिस वस्तु की आवश्यकता होगी उसकी अगर पूर्ति नहीं होगी तो उसकी पूर्ति के अलग रास्ते बनेंगे जो गलत हो सकते हैं। अगर स्कूल में संतरा उपलब्ध रहे तो क्या बच्चा चोरी करेगा? इस चोरी में आप लोगों की गलती है, बच्चे की नहीं। उस कार्यकर्ता से आर्यनायकम् जी ने कहा कि आप जाओ व्यापरी का पैसा वापस करो। यह बाग बच्चों के लिए है। हर बच्चे को संतरा मिलना चाहिए और फिर कोई बच्चा चोरी नहीं करेगा।

आनंद निकेतन में बापू

गांधीजी कई बार विद्यालय परिसर में आ जाते थे। उन्हें कभी कोई बच्चा मिल जाता था तो उसके साथ बात भी कर लेते थे। चौहान गुरुजी बताते हैं कि उन्हें लगभग छह वर्षों तक गांधीजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। वे याद करते हैं कि 16 जून, 1936 में गांधीजी उनके घर के पास स्थित मंदिर में आए थे। वहाँ उन्होंने गाँव वालों के साथ एक बैठक की। उन्होंने गाँव वालों को स्वच्छता अभियान आरंभ करने की सलाह दी। बाद में कई बार गांधीजी ने चौहान गुरुजी के घर के बरामदे में गाँव वालों के साथ बैठक और प्रार्थना की। वे याद करते हैं कि गांधीजी सफ़ाई अभियान के दौरान गाँव में घूमते समय किसी न किसी के घर ज़रूर जाते। वे बताते हैं कि जब वे छोटे थे तो कई बार प्रार्थना के दौरान गांधीजी के पास बैठ जाते थे। उन्होंने यह भी बताया कि उन्हें गांधीजी के साथ बैठकर भोजन करने का अवसर मिला है।

कुसुम ताई पांडेय बताती हैं कि एक बार विद्यालय के विद्यार्थियों ने बापू से आग्रह किया कि वे कुछ समय विद्यालय में दिया करें। बापू ने सहमति दी और कहा कि वे हम लोगों के अध्यापक बनेंगे। हम लोगों ने पूछा कि बापू आप क्या पढ़ाएँगे? बापू बोले मैं सफ़ाई पढ़ाता हूँ। इसके बाद बापू ने कई दिन तक सफ़ाई का पाठ पढ़ाया। यह क्रम लगभग एक महीने तक चला। पांडुरंग गुरुजी बताते हैं कि उन्होंने गांधीजी के साथ नियमित प्रार्थना में भागीदारी की। कई बार गांधीजी ने उन्हें दूध पीने को भी दिया। वे बताते हैं कि आश्रम में जो भी बच्चा गांधीजी से मिलता था, उसे वे अकसर दूध पीने को दिया करते थे। ऐसे ही वैश्य गुरुजी एक विस्तृत अनुभव साझा करते हैं। वे बताते हैं कि वर्ष 1944 में बापू आगाखां पैलेस से रिहा होकर सेवाग्राम आए। कुछ दिनों बाद वे आनंद निकेतन के छात्रावास को देखने के लिए अचानक आ गए। छात्रावास अधीक्षक पांडे गुरु जी को जब पता लगा कि गांधीजी हॉस्टल जा रहे हैं तो वे दौड़ते हुए आए और बापू के सामने खड़े हो गए। बापू ने पूछा कि आप कौन हैं? पांडे गुरु जी ने कहा कि मैं यहाँ का छत्रपति (वार्डन) हूँ। पांडे गुरुजी हड़बड़ी में आ रहे थे। उनके कुर्ते की बटने खुली थी। खुली बटनों को बापू ने देखा तो बापू ने अपने हाथ से पांडे गुरु जी की बटने लगा दी। बापू आगे बढ़े। रसोईघर के पास बरतन धुलकर रखे थे। उन्होंने पांडे गुरु जी का हाथ पकड़ा और थाली के ऊपर हाथ फिराया। पांडे गुरु जी की उँगली में धूल लगी हुई थी। गांधीजी आगे बड़े उस जगह पहुँचे जहाँ सभी बच्चों के बिस्तर रखे हुए थे। बापू को बदबू महसूस हुई। उन्होंने आगे बढ़कर बिस्तर उठाना शुरू कर दिया। जब बापू सभी बच्चों के बिस्तर उठा रहे थे तो बापू को देखकर अन्य लोग भी बिस्तर उठाने लगे। गांधीजी ने बिस्तरों को धूप में सूखने के लिए डाल दिया। बापू ने कहा कि बच्चों की बीमारी का कारण स्वच्छता का न होना है। उस

© NCERT not to be republished

समय एक बच्चा बीमार था। बापू ने उसके बिस्तर को स्वयं धोया। जब यह पूरा प्रकरण आर्यनायकम् जी को पता चला तो आशा देवी और आर्यनायकम् जी आश्रम में बापू से माफ़ी माँगने गए। बापू ने कहा कि गलती तुम्हारी नहीं है, गलती मेरी है। शायद मैं तुम्हें ठीक से ट्रेनिंग नहीं दे सका!

आज़ादी के आंदोलन में विद्यार्थियों की भागीदारी

प्रस्तुत कार्य के भागीदारों की स्मृतियों में स्वतंत्रता आंदोलन की अमिट छाप विद्यमान थी। खासकर ये लोग भारत छोड़ो आंदोलन के समय में अपनी भूमिका को बताना नहीं भूलते हैं। चौहान गुरुजी और अंबुलकर गुरुजी बताते हैं कि उस समय जो भी वंदेमातरम् कहता था, उसे जेल में डाल दिया जाता था। इस स्थिति में आनंद निकेतन के विद्यार्थियों ने एक तरीका निकाला वे अपने पास में छोटी-छोटी पताका रखते थे और गाँव में फेरियाँ निकालते थे। ऐसे ही कुसुम ताई पांडेय बताती हैं कि उस समय प्रातःकाल गाँव भर में प्रभात फेरियाँ निकाली जाती थीं। उन प्रभात फेरियों में आज़ादी के गीत और स्फूर्ति गीत गाते थे। फेरियों में गाए जाने वाले गाने वही होते थे जो आनंद निकेतन स्कूल की प्रार्थना में गाते थे।

पांडुरंग गुरुजी बताते हैं कि भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बच्चे संदेशवाहक का कार्य करते थे। वे आंदोलनकारियों के पत्र पहुँचाते थे। अंबुलकर गुरुजी बताते हैं कि एक बार सेवाग्राम आश्रम पर पुलिस का पहरा लगा हुआ था। एक दिन उन्हें एक पुलिस वाले ने रोका और उनसे पूछा कि वे कहाँ रहते हैं? तो उन्होंने कहा कि सेगांव। उस पुलिस वाले ने पूछा कि तुम क्या करते हो? मैंने कहा कि भीख माँगता हूँ। उस पुलिस वाले ने कहा कि तू झूठ बोलता है और उसने मुझे एक थप्पड़ मारा। उसने कहा, "तू नई तालीम आश्रम में पढ़ता है न। तू संदेश पहुँचाता है।" उसी समय उन्होंने चिट्ठी निकाली और खा ली। वैश्य गुरुजी अपना विशिष्ट अनुभव साझा करते हैं और बताते हैं कि, "एक बार गाँव में झंडा फहराना था। बारिश हो रही थी। हम बच्चे आशा देवी के साथ भेष बदलकर गए और इस कार्य को पूर्ण किया। इसके बाद पुलिस आ गई। पुलिस ने हमें वंदेमातरम् गाते हुए पकड़ लिया। माता जी को भी पकड़ा और हमको भी। बच्चों को शाम तक छोड़ दिया और बड़ों को वर्धा ले गए।" इस कार्य के सभी भागीदारों ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि उनका विद्यालय आंदोलनों में विद्यार्थियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करता था। कई बार सत्याग्रह के दौरान आनंद निकेतन के विद्यार्थियों को दायित्व सौंपा जाता था। उन्हें कताई के लिए कपास और चरखा देने का कार्य दिया जाता था।

सामाजिक दायित्वों का निर्वहन

गांधीजी की परिकल्पना के अनुसार आनंद निकेतन विद्यालय के विद्यार्थी स्थानीय समुदाय के साथ भी कार्य करते थे। उदाहरण के लिए, कई विद्यार्थियों ने इस विद्यालय द्वारा जन स्वास्थ्य कार्यक्रम में भागीदारी के अनुभव को साझा किया। इन भागीदारों ने बताया कि अमरीका के एक डॉक्टर आए थे उन्होंने जन स्वास्थ्य और विज्ञान से जुड़े कार्यक्रम चलाए। स्वच्छ जल से जुड़ा अभियान 11 से 12 गाँवों में चलाया गया। प्रभात जी और उनके मित्रों ने दो वर्ष तक इस अभियान में कार्य किया। वे लोग गाँव-गाँव जाते थे, लोगों को स्वच्छ पानी के महत्व और

© NCERT not to be republished

पानी को स्वच्छ करने की घरेलू विधियों से परिचित कराते थे। इस कार्य में वे लोग गाँव के विद्यालय के अध्यापकों की भी मदद लेते थे।

प्रभात जी ऐसा ही एक और अनुभव साझा करते हैं। वे बताते हैं कि सेवाग्राम मेडिकल कॉलेज में एक डॉक्टर थे। वे कभी-कभी उनकी प्रयोगशाला में जाकर कार्य करते थे। कुष्ठ रोग के बारे में जागरूकता फैलाने में मदद की। ऐसे ही वैश्य गुरुजी ने बताया कि स्वतंत्रता के बाद देश का विभाजन हुआ। पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को राजपुरा, पंजाब में बसाया गया। यह स्थान अंबाला से 17 किलोमीटर दूर था। वहाँ एक लाख दस हज़ार शरणार्थियों का कैम्प था। उस कैम्प के बच्चों को पढ़ाने के लिए सेवाग्राम आश्रम विद्यालय से 12 वरिष्ठ विद्यार्थी गए। राजपुरा में एक बहुत बड़ा आम का बाग था। उन्हीं पेड़ों के नीचे वे बच्चों को पढ़ाते थे। लगभग डेढ़ वर्ष तक उन्होंने वहाँ शिक्षण किया। पांडुरंग गुरुजी बताते हैं कि आर्यनायकम् जी के निर्देश पर उन्होंने शांताताई के साथ मिलकर गाँव में हथकरघा लगाया। गाँव वालों को कताई और बुनाई सिखाई। इसके साथ गाँव वालों को साक्षर भी बनाया। नारायण गुरुजी बताते हैं कि जब सर्वोदय आंदोलन आरंभ हुआ तो आठ दिन तक हम भूदान के लिए घूमे। एक समूह में दो अध्यापक और तीन विद्यार्थी होते थे। हम लोग गाँव-गाँव घूमते थे और गीत गाते थे, ''सबै भूमि गोपाल की, नहीं किसी की मालिकी'' आठ दिन तक वर्धा ज़िले में आर्वी के ब्लॉक में ये सभी लोग गए थे।

आनंद निकेतन विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों पर मनन करते हुए विद्यालय की कुछ सीमाओं का उल्लेख किया। उदाहरण के लिए, प्रभात जी बताते हैं कि विद्यालय द्वारा प्रचलित प्रारूप में प्रमाण पत्र न मिलने के कारण अनेक विद्यार्थियों को भविष्य में समस्याओं का सामना करना पड़ा। वे नई तालीम को एक ऐसी आदर्शवादी व्यवस्था के रूप में बताते हैं जिसके लिए राज्य कभी तैयार नहीं हो सका। ऐसे ही वैश्य गुरुजी स्कूल की ओर से राज्य के प्रतिरोध की चर्चा करते हैं। वे बताते हैं कि आर्यनायकम् जी स्कूल के स्वावलंबी प्रकृति की रक्षा के लिए सरकार के सहयोग को खारिज कर देते थे। उनके अनुसार आर्यनायकम् जी का मानना था कि राज्य का सहयोग विद्यालय के संचालन में स्वायत्तता और स्वावलंबन को समाप्त कर 'ऑडिटिंग' की व्यवस्था का कारण बनेगा।

आशा गिरी बताती हैं कि आशा देवी इस बात को पसंद नहीं करती थी कि नई तालीम में पढ़ने के बाद कोई विद्यार्थी केवल उपाधि के लिए किसी अन्य सरकारी विद्यालय में जाए। जबकि सरकारी नौकरी के लिए इसकी आवश्यकता होती थी। इसी कारण बाद के वर्षों में उन्होंने आनंद निकेतन छोड़ दिया और सरकारी विद्यालय से 10वीं की परीक्षा दी। इन सीमाओं के बावजूद भी आनंद निकेतन के पुरा विद्यार्थी बताते हैं कि स्वतंत्र भारत में नई तालीम की प्रतिष्ठा थी। राज्य सरकारों के विद्यालयों में सेवाग्राम से प्रशिक्षित अध्यापकों को तुरंत नौकरी दे दी जाती थी। इसका कारण यह था कि इन युवाओं ने ग्राम्य जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया था। उन्हें वास्तविक समस्याओं का सामना करने का हुनर मालूम था। इसी तरह कताई, बुनाई और तेलघानी से संबंधित उद्योगों, गाँव में

© NCERT not to be republished

उपयोग की जाने वाली मशीनों से संबंधित उद्योगों, गाँव में स्वास्थ्य, चिकित्सा एवं जीवनोपयोगी सेवाओं में भी यहाँ से पढ़े विद्यार्थियों को वरीयता दी जाती थी। यहाँ से निकले कई विद्यार्थियों ने अपनी औपचारिक शिक्षा के बाद ग्रामोद्योग आरंभ किए। उनके ये प्रयोग सफल भी रहे। यहाँ से प्रशिक्षित अध्यापकों ने वर्धा और आस-पास के ज़िलों के परिषदीय विद्यालयों में कार्य किया।

इस कार्य में प्रस्तुत आनंद निकेतन विद्यालय के पुराविद्यार्थियों के आख्यान बताते हैं कि एक स्वायत्त एवं स्वावलंबी विद्यालय द्वारा सामाजिक बदलाव की परिकल्पना को चरितार्थ किया जा सकता है। इन आख्यानों में विद्यालय की उस वृहद् भूमिका को देख सकते हैं, जिसे गांधीजी ने सामाजिक परिवर्तन के लिए परिकल्पित किया था। इस भूमिका का मूल विद्यालय द्वारा समुदाय एवं प्रकृति के साथ सहजीवन के मूल्य को आत्मसात करना है। इसी कारण विद्यालय की गतिविधियों में उत्पादक कार्यों द्वारा वैज्ञानिक ज्ञान एवं दृष्टि के विकास का मॉडल उपस्थित रहा। इन आख्यानों ने विद्यालय द्वारा राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना के विकास पर भी प्रकाश डाला है। सेवाग्राम और आनंद निकेतन विद्यालय से संबंधित जो साहित्य उपलब्ध हैं, उनमें इस पक्ष का कम ही उल्लेख मिलता है। गांधीजी ने नई तालीम में जिस स्वराज बोध की कल्पना की थी, उसमें तर्कपूर्ण चिंतन के आधार पर राजनीतिक हस्तक्षेप एक था। ये आख्यान बताते हैं कि आनंद निकेतन के विद्यार्थी और अध्यापक विद्यालय के बाहर भी 'स्वराज' में अपनी भूमिका निभा रहे थे। स्वतंत्रता के बाद भी वे अपने सामाजिक-राजनीतिक दायित्वों के प्रति सचेत और सक्रिय थे।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

शिवदत्त. 2012. *नई तालीम— एक विहंगावलोकन*. नई तालीम समिति, सेवाग्राम.

साइक्स, मार्जरी. 2014. *नई तालीम की कहानी*. नई तालीम समिति, सेवाग्राम.